150 YEARS OF VANDE MATARAM

The song *Vande Mataram* was composed by Bankim Chandra Chattopadhyay in the mid-1870s, a time when India's freedom struggle was gaining momentum. It is believed that the song was composed during the auspicious occasion of *Askhya Navami* on 7th November 1875. It first appeared in Bankim Chandra Chattopadhya's literary journal *Bangadarshan* and was later included in his novel *Anandamath (1882).*

The song was written during a period of growing national consciousness and it invoked the Motherland as a symbol of strength, prosperity, and divinity, giving poetic expression to India's awakening spirit of unity and self-respect. The song became popular among the masses after Gurudev Rabindranath Tagore gave it voice at the 1896 session of the Indian National Congress. The song became a rallying cry of the Swadeshi Movement following the partition of Bengal in 1905, uniting people across regions and inspiring countless patriots. The song's emotional and spiritual resonance made it an enduring symbol of India's nationalist movement. During the freedom struggle, *Vande Mataram* became a source of collective inspiration, instilling in the people a deep sense of patriotism and cultural pride. It served as a unifying anthem that brought together countless Indians in their quest for independence and national dignity.

On 24th January 1950, while announcing the adoption of the Constitution, Dr Rajendra Prasad, the first President of India, declared that *Vande Mataram*, which had played a historic role in the freedom struggle, would be honoured as the National Song. Since then, the song has been a symbol of national pride, unity, and the indomitable spirit of India's freedom and cultural heritage.

As the nation marks the 150th anniversary of *Vande Mataram* in 2025, nationwide celebrations are being organised to commemorate its legacy and reaffirm the timeless ideals of unity, sacrifice, and love for the Motherland.

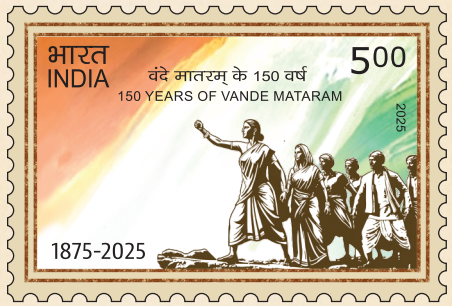
It is an honor for the Department of Posts to release a Commemorative Postage Stamp on 150 years of *Vande Mataram*, celebrating its enduring legacy as a hymn of patriotism and a unifying force that continues to inspire generations of Indians.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Sankha Samanta
Text	:	As per the content provided by the Ministry of Culture

भारतीय डाक
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



वंदे मातरम् के 150 वर्ष

150 YEARS OF VANDE MATARAM

विवरणिका BROCHURE

वंदे मातरम् के 150 वर्ष

वंदे मातरम् गीत की रचना बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 1870 के दशक के मध्य में की थी। यह वह समय था जब भारत का स्वतंत्रता संग्राम गति पकड़ रहा था। ऐसा माना जाता है कि इस गीत की रचना 7 नवंबर 1875 को अक्षय नवमी के पावन अवसर पर की गई थी। यह गीत पहली बार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में प्रकाशित हुआ और कालांतर में उनके लोकप्रिय उपन्यास आनंदमठ (1882) का हिस्सा बना।

राष्ट्रीय चेतना के जागरण के दौर में लिखे गए इस गीत में मातृभूमि को शक्ति, समृद्धि और दिव्यता का प्रतीक मानते हुए उसका आह्वान किया गया है तथा तत्समय भारत में जागृत हो रही एकता और स्वाभिमान की भावना को काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1896 के अधिवेशन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्वरबद्ध किए जाने के बाद यह गीत जनसाधारण के बीच अत्यंत लोकप्रिय हो गया। 1905 में बंगाल विभाजन के बाद 'वंदे मातरम्' स्वदेशी आंदोलन का जयघोष बन गया और इसने देशभर के कोटि–कोटि लोगों में एकता की भावना पल्लवित की तथा असंख्य देशभक्तों का प्रेरणास्रोत बना। इस गीत की भावनात्मक और आध्यात्मिक भव्यता ने इसे भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन के चिर–स्थायी प्रतीक के रूप में स्थापित किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, वंदे मातरम् ने लोगों में देशभक्ति और सांस्कृतिक गौरव की प्रगाढ़ भावना का संचार किया और यह गीत सामूहिक प्रेरणा का स्रोत बनकर उभरा। इस गीत ने भारतीय स्वतंत्रता और राष्ट्रीय गरिमा के प्रति समर्पित असंख्य भारतीयों को एकजुट करने वाली एकाकारी शक्ति के रूप में कार्य किया।

24 जनवरी 1950 को, संविधान को अंगीकार करते हुए, भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने घोषणा की कि स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले वंदे मातरम् गीत को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया जाएगा। तब से, यह गीत राष्ट्रीय गौरव, एकता और भारत की स्वतंत्रता संग्राम की अदम्य भावना तथा सांस्कृतिक विरासत का उदात्त प्रतीक बन गया है ।

वर्ष 2025 में देश वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस अवसर पर देशभर में इस गीत की विलक्षण विरासत का उत्सव मनाने और एकता, बलिदान तथा मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम के शाश्वत आदर्शों को सुदृढ़ करने के निमित्त राष्ट्रव्यापी समारोह आयोजित किए जा रहे हैं।

डाक विभाग, वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट देशभक्ति के इस कालजयी जयघोष और पीढ़ी दर पीढ़ी भारतीयों को प्रेरित करने वाली इस एकाकारी शक्ति की चिर स्थायी विरासत को रेखांकित करता है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री शंख सामंत

पाठ : संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 303300
Stamps Printed	: 303300
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00